क्रीमिया युद्ध के कारण एवं परिणाम

Course – M.A. History, Part II, Paper – XVI; Prepared by – Dr. P.K. Poddar

क्रीमिया युद्ध को आधुनिक समय में लड़ा गया एक बिल्कुल ही बेकार का युद्ध कहा गया है। अवसर, स्वरूप और मुद्दों के दृष्टिकोण से यह बिल्कुल ही महत्वहीन एवं व्यर्थ का युद्ध था। फिर भी यह प्रतिद्वन्द्वी शक्तियों के आपस में उलझे हुए और परस्पर विरोधी स्वार्थों का परिणाम था। तूफान का केन्द्र बाल्कन प्रायद्वीप की राजनीति थी। इस प्रायद्वीप की जनता की राष्ट्रवादी अभिलाषाओं और इस क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापित करने की ~~महत्वाकांक्षा~~ महाशक्तियों की प्रतिद्वन्द्विता ने इसे यूरोपीय तनाव का मुख्य स्थल बना दिया था। सारी समस्या की उत्पत्ति यूरोप में ऑटोमन साम्राज्य के बिखराव के फलस्वरूप हुई। इस प्रकार, यूरोप के बड़े राष्ट्रों का स्वार्थ, रूस और फ्रांस के सम्राट नेपोलियन तृतीय की स्वार्थपरता मुख्य रूप से युद्ध का कारण बनी।

पतनोन्मुख टर्की साम्राज्य 'यूरोप का मरीज' कहा जाता था और यूरोप के विभिन्न राष्ट्र उसे आपस में बाँट लेना चाहते थे। इसके लिए रूस विशेष रूप से उत्सुक था। रूस के शासक एशिया में अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे। इसके लिए सामुद्रिक आवागमन के मार्ग पर अधिकार करना जरूरी था। डार्डेनल्स और बॉस्फोरस पर टर्की का अधिकार था। भू-मध्य सागर में पहुँचने के लिए इन जगहों पर अधिकार करना आवश्यक था और यह तभी संभव था जबकि टर्की साम्राज्य का विघटन हो। टर्की को कमजोर बनाने के लिए रूस बाल्कन की ईसाई प्रजाओं को स्वतंत्रता की माँग करने के लिए प्रोत्साहित करने लगा। इसके पीछे उसका उद्देश्य बाल्कन क्षेत्र में अपना साम्राज्य विस्तार करना था। बाल्कन प्रायद्वीप के लोग मुख्यतः स्लाव जाति के थे और बन्धुत्व की भावना से प्रेरित होकर रूस उनका समर्थन कर रहा था। इसके अतिरिक्त रूस का सम्राट ग्रीक चर्च का प्रधान था। अतः धार्मिक दृष्टिकोण से भी बाल्कन लोगों की सहायता करना रूस आवश्यक समझता था। संक्षेप में, रूस के शासक टर्की-

साम्राज्य के खंडहर पर विशाल रूसी साम्राज्य का महल उठाना चाहते थे। रूस की इस महत्वाकांक्षा का प्रबल विरोधी इंगलैण्ड था। इंगलैण्ड के राजनीतिज्ञों की दृष्टि में भूमध्यसागर में रूस का प्रवेश भारत के लिए जबर्दस्त खतरा था। अतः इंगलैण्ड अपने भारतीय साम्राज्य की सुरक्षा के लिए यूरोप के मरीज को किसी तरह जीवित रखना चाहता था। जब रूस इंगलैण्ड को अपने पक्ष में नहीं कर सका तब वह शक्ति के सहारे तुर्की साम्राज्य पर आधिपत्य स्थापित करने की योजना बनाने लगा। क्रीमिया युद्ध का यह पृष्ठाधार था। लुई नेपोलियन की आक्रामक विदेश नीति के फलस्वरूप पूर्वी समस्या में और भी जटिलता आगयी। वह साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था और इसके लिए निकट-पूर्व में अपूर्व अवसर था। तुर्की के बँटवारे में वह फ्रांस को भी हिस्सा दिलाना चाहता था। क्रीमिया युद्ध का सूत्रपात नेपोलियन की इसी नीति के फलस्वरूप हुआ। उसका ख्याल था कि यदि वह रोमन पादरियों का हक दिलाने में सफल हो गया तो वह फ्रांस के रोमन कैथोलिकों में लोकप्रिय बना रहेगा। नेपोलियन ने सोचा कि यदि युद्ध में रूस को हरा दिया जाय तो फ्रांस में उसकी ख्याति इस बात से भी बढ़ जायेगी कि उसने 1814-15 ई० की अपमानजनक पराजय का बदला इस रूप में लिया।

ईसाइयों का पवित्र स्थान जेरुसलम तुर्की साम्राज्य में पड़ता था। वहाँ रोमन और ग्रीक चर्च के संन्यासी रहते थे। रोमन संन्यासियों की सुरक्षा का भार फ्रांस पर और ग्रीक संन्यासियों की सुरक्षा का भार रूस पर था। रोमन तथा ग्रीक संन्यासी एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी थे। 1789 ई० के बाद जब फ्रांस क्रान्तिजनित परिस्थितियों में उलझ गया, तो ग्रीक संन्यासियों ने रोमन संन्यासियों के विशेषाधिकार पर अतिक्रमण करना शुरू किया। नेपोलियन तृतीय ने रोमन पादरियों के अधिकारों को वापस करने की माँग की। तुर्की का सुल्तान इसके लिए तैयार हो गया। जार ने ग्रीक पादरियों का पक्ष लिया और

माँग की कि ग्रीक पादरियों के विशेषाधिकारों में किसी प्रकार की कटौती नहीं होनी चाहिए। तुर्की के सुल्तान ने फ्रांस और रूस के बीच समझौता कराने का प्रयास किया, लेकिन दोनों ही इसके लिए तैयार नहीं थे।

रूस धर्म का बहाना बनाकर तुर्की के प्रदेशों पर अधिकार जमाना चाहता था। 1853 में रूस ने तुर्की को 'अल्टीमेटम' देकर तुर्की साम्राज्य में रहने वाले सभी ईसाईयों के संरक्षण का अधिकार माँगा। तुर्की द्वारा अल्टीमेटम अस्वीकार करने पर जुलाई 1853ई० में रूस की सेना तुर्की साम्राज्य में घुस पड़ी और मोल्डेविया तथा वेलेशिया के प्रान्तों पर अधिकार कर लिया। रूस के कार्यों से इंगलैण्ड और फ्रांस दोनों चिन्तित हो उठे। सहायता का आश्वासन पाकर सुल्तान ने रूस से इन प्रदेशों को खाली करने की माँग की, परन्तु रूस ने इस माँग को अस्वीकार कर दिया। इस पर 27 फरवरी, 1854 को इंगलैण्ड और फ्रांस ने संयुक्त रूप से रूस को मोल्डेविया तथा वेलेशिया खाली करने के लिए अल्टीमेटम दिया। संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर दोनों देशों ने रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। क्रीमिया का युद्ध दो वर्षों तक चलता रहा। इस युद्ध में एक ओर इंगलैण्ड, फ्रांस और तुर्की तथा दूसरी ओर रूस था। रूस की इस युद्ध में पराजय हुई। इस युद्ध का अंत 30 मार्च, 1856 की पेरिस की संधि के द्वारा हुआ।

पेरिस की संधि की मुख्य शर्तें निम्नलिखित थी— यूरोप के विभिन्न राष्ट्रों ने तुर्की की प्रादेशिक अखंडता एवं राजनीतिक स्वतंत्रता बनाये रखने का वचन दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि वे तुर्की के आन्तरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। बदले में सुल्तान ने अपनी ईसाई प्रजा की स्थिति सुधारने का वादा किया। मोल्डेविया और वेलेशिया पर से रूस का अधिकार समाप्त हो गया। साथ ही रूस ने तुर्की की ईसाई प्रजा के संरक्षण का अपना

अधिकार त्याग दिया। सर्बिया की स्वतंत्रता भी मान ली गई। डैन्यूब नदी अन्तर्राष्ट्रीय घोषित की गयी। काला सागर को तटस्थ घोषित किया गया। रूस को काला सागर के तट पर नये शस्त्रागार बनाने से रोक दिया गया और पुराने शस्त्रागारों को खाली करने का आदेश दिया गया।

क्रीमिया युद्ध के परिणामों के सम्बन्ध में इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ इतिहासकार इसे आधुनिक युग का एक पूर्ण व्यर्थ युद्ध मानते हैं और कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि यदि यह युद्ध नहीं होता तो तुर्की पूर्णतः रूस के अधीन चला जाता। इस युद्ध के तात्कालिक तथा दूरगामी परिणाम हुए। कुछ दिनों के लिए रूस की विस्तारवादी नीति पर रोक लगा दी गयी। तुर्की में नव जीवन का संचार हुआ। यूरोप के सभी राज्यों ने सम्मिलित रूप से तुर्की की प्रादेशिक अखंडता स्वीकार की। इस युद्ध के कारण नेपोलियन तृतीय की ख्याति बढ़ी और यूरोप में उसकी धाक जम गयी।

लेकिन ये तात्कालिक परिणाम आगे चलकर व्यर्थ साबित हुए। युद्ध के बाद तुर्की का पतन अवश्यम्भावी हो गया। सर्बिया को स्वतंत्रता प्रदान की गयी, जो अन्य पराधीन देशों के लिए प्रेरणा का स्रोत हो गया। वे भी अपनी स्वाधीनता की माँग करने लगे। इसके अतिरिक्त सुल्तान ने यह आश्वासन दिया था कि वह ईसाई प्रजाओं को संतुष्ट करने का प्रयास करेगा, लेकिन उसने अपने वचन का पालन नहीं किया और इससे लोगों में असंतोष बढ़ा। पेरिस की संधि का मुख्य उद्देश्य रूसी महत्त्वाकांक्षाओं पर अंकुश लगाना था, लेकिन यह उद्देश्य पूरा नहीं हो सका। इंगलैण्ड तथा फ्रांस को कोई स्थायी लाभ नहीं हुआ। युद्ध का गहरा प्रभाव इंगलैण्ड की आर्थिक स्थिति पर पड़ा। इसलिए कहा जा सकता है कि जिन उद्देश्यों को लेकर यह युद्ध लड़ा गया था, उनकी दृष्टि से यह व्यर्थ साबित हुआ।

फिर भी इस युद्ध के अप्रत्यक्ष परिणाम दूरगामी और व्यापक हुए। इटली और जर्मनी का एकीकरण, रूस की राजनीति, बाल्कन प्रायद्वीप के पुनर्निर्माण एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। इटालवी राज्य सार्डीनिया को युद्ध से बड़े फायदे हुए। इटली क्रीमिया युद्ध में इसीलिए शामिल हुआ था कि वह अपनी स्वतंत्रता चाहता था। पेरिस सम्मेलन में काबूर ने इटली की दुर्दशा का सच्चा चित्र खींचा और आस्ट्रिया की नीति का विरोध किया। फलस्वरूप उसे ब्रिटेन की सहानुभूति एवं नेपोलियन का सक्रिय समर्थन मिला जिससे इटली के एकीकरण में काफी सहायता मिली। यह ठीक ही कहा गया है कि क्रीमिया के दलदल से इटली का उदय हुआ।

जर्मनी की एकता के प्रयत्न पर भी क्रीमिया युद्ध का अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा। आस्ट्रिया जर्मनी के एकीकरण का प्रबल विरोधी था। क्रीमिया युद्ध के समय आस्ट्रिया ने अपने को तटस्थ घोषित किया था। इससे रूस नाराज था। जब आस्ट्रिया और प्रशा के बीच जर्मनी के एकीकरण को लेकर युद्ध छिड़ा तो रूस ने आस्ट्रिया को मदद नहीं की, फलतः उसे मुँह की खानी पड़ी। इसप्रकार जर्मनी के एकीकरण में क्रीमिया युद्ध का विशेष महत्व है।

सामान्य अर्थ में क्रीमिया का युद्ध यूरोपीय इतिहास की विभाजक-रेखा थी। यह तथ्य रूस के लिए विशेष रूप से सही था। विदेशी युद्ध में पराजय ने जार निकोलस प्रथम की शासन नीति को पूरी तरह से बेकार प्रमाणित कर दिया और रूस में प्रजातंत्र की स्थापना के लिए एक आन्दोलन प्रारम्भ करा दिया। रूस में सुधार की माँग होने लगी। जार अलेक्जेण्डर के समय में रूस में बृहत् पैमाने पर सुधार हुआ। यदि क्रीमिया युद्ध नहीं होता, तो शायद रूस में सुधारों का कार्य प्रारंभ नहीं होता। एक दूसरे प्रकार से भी

रूस. युद्ध का प्रभाव रूस पर पड़ा। इस. युद्ध ने साम्राज्यवादी रूस के विस्तार की दिशा ही बदल दी। युद्ध से यह स्पष्ट हो गया कि इंगलैण्ड टर्की साम्राज्य की दिशा में रूस के विस्तार का विरोध करेगा, इसलिए अब उसने अपनी गतिविधि का केन्द्र पूर्व एशिया को बनाया, जिससे सुदूर पूर्व की समस्या उत्पन्न हुई।

क्रीमिया का युद्ध एक अनावश्यक और व्यर्थ का युद्ध था, फिर भी यह परिणामों से भरपूर था। इसने 1815 ई० की वियना व्यवस्था की नींव को हिला दिया। इस युद्ध के बाद परिवर्तन का विरोध करने वाली शक्तियाँ बहुत कमजोर पड़ गई।

इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणों से क्रीमिया का युद्ध यूरोपीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। यूरोपीय इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। यह पहला युद्ध था जिसमें आधुनिक वैज्ञानिक साधनों का उपयोग किया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि तात्कालिक परिणाम की दृष्टि से यद्यपि इसका परिणाम बिल्कुल व्यर्थ सिद्ध हुआ, लेकिन दूरगामी परिणाम की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण लड़ाई थी। क्रीमिया युद्ध ने यूरोप के इतिहास को आन्दोलित कर दिया। इस युद्ध ने एक नये युग का प्रारंभ किया जिससे कई युगान्तकारी घटनाओं के लिए रास्ता खुल गया।

The End